वर्ष:9 | अंक:106 | अक्टूबर, 2026

मूल्य: ₹5



पू. कैलाश जी 'मानव'

NARAYAN SEVA SANSTHAN

Nar Seva Narayan Seva

सेवा पाती

इंतजार की घड़ियां हुई खत्म

50 दिव्यांगों की गृहस्थी का सपना हुआ साकार

नारायण कृत्रिम अंग कार्यशाला

NARAYAN LIMBS & CALIPERS
can transform lives

आइए, इसके कदमों को
मंज़िल तक पहुँचाएँ।"

₹ 10,000/-

Donate via UPI

narayanseva@sbi



कहानी उनकी ...
किरदार आपका ...



NARAYAN SEVA SANSTHAN
Nar Seva Narayan Seva

दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं

अनुक्रमणिका

मूल्य ▸ 5 वर्ष ▸ 9 अंक ▸ 106
मुद्रण तारीख ▸ 1 अक्टूबर, 2026 कुल पृष्ठ ▸ 28

05 परमार्थ ही खोलेगा मोक्षद्वार
06 एक दीप अपने लिए, एक किसी और के लिए
07 सिलाई के हुनर से आत्मनिर्भरता
08 छह ऑपरेशन के बाद परसन को मिला चलने का सुख
10 दुःख भरे दिन बीते-अब सुख आयो रे...
11 दिव्यांगता की राह में मिला जीवनसाथी
18 लखनऊ शिविर में पहुंचे 550 से अधिक दिव्यांगजन
20 छोटी सी पहल, बड़ी मुस्कान
22 अखाड़े में चमके नन्हें सितारे

सम्पादक मंडल

मार्गदर्शक ▸ कैलाश चन्द्र अग्रवाल। सम्पादक ▸ प्रशान्त अग्रवाल
सहयोग ▸ विष्णु शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद गौड़
डिजाइनर ▸ विरेन्द्र सिंह राठौड़

नारायण सेवा संस्थान , वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी,
सेवातीर्थ, सेंट्रल एरिया, उदयपुर – 313002, राजस्थान
फोन नं. +91-294-6622222 वाट्सऐप: +91-70235 09999
www.narayanseva.org | info@narayanseva.org

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 अक्टूबर, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित।
मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये



'सेवक' प्रशांत भैया

सतत सेवा और समर्पण के 42 वें वर्ष में प्रवेश

सेवा से संकल्प तक, संवेदना से समर्पण तक
नारायण सेवा संस्थान की यात्रा मानवता में अटूट विश्वास की यात्रा है।

23 अक्टूबर 1985 को जब सेवा की यह छोटी–सी नींव रखी गई, तब न बड़े संसाधन थे, न सुविधाओं का विस्तार। था तो केवल घर–घर से जुटाया गया एक–एक मुट्ठी आटा, परिवार का अथक परिश्रम और कुछ संवेदनशील साथियों का सहयोग। सामने था अभावों से जूझता निर्धन, असहाय और दिव्यांग समाज। साधन सीमित थे, लेकिन संकल्प विराट था। परम पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव' और गुरुमाता श्रीमती कमला देवी जी के समर्पण ने अभावों को अवसर और कठिनाइयों को सेवा की राह बना दिया।

आज वही संकल्प एक विशाल सेवा–वटवृक्ष बन चुका है। लाखों दिव्यांगजनों को निःशुल्क उपचार, सर्जरी, कृत्रिम अंग एवं कैलिपर्स के साथ शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भरता की राह दिखाई जा रही है। 4.55 लाख से अधिक निःशुल्क उपचार केवल एक आंकड़ा नहीं, बल्कि लौटे हुए आत्मविश्वास और बदली हुई जिंदगियों की कहानी है।

संस्थान का विश्वास है कि धन से संसाधन खरीदे जा सकते हैं, संतोष नहीं। जीवन की सार्थकता केवल अपने लिए जीने में नहीं, बल्कि दूसरों के जीवन में आशा का दीप जलाने में है। इसी भावना से 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः' को ध्येय बनाकर सेवा का यह कारवां देश की सीमाओं से आगे बढ़ा है।

शहर के मध्य निर्मित 11 मंजिला 'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी' इस यात्रा का नया पड़ाव है, जहां दिव्यांगजनों की आवश्यकताओं के अनुरूप सर्जरी, कृत्रिम अंग निर्माण एवं फिटमेंट तथा प्रशिक्षण जैसी सेवाएं एक ही छत के नीचे उपलब्ध हैं। देशभर में सेवा शिविरों के साथ तंजानिया और युगांडा तक पहुंची यह सेवा–धारा मानवता की वैश्विक संवेदना का प्रतीक बन रही है। प्राकृतिक आपदाओं और महामारी के कठिन समय में भी संस्थान का यह सेवा अभियान सक्रिय रहा। क्योंकि सेवा केवल कार्य नहीं, संस्कार है। केवल दायित्व नहीं, जीवन–दृष्टि है।

संस्थान के 42वें सेवा वर्ष में प्रवेश के इस गौरवपूर्ण अवसर पर आपका सहयोग और विश्वास हमारी सबसे बड़ी शक्ति है। आइए, मिलकर इस अखंड ज्योति को प्रज्वलित रखें।

भवन पुराने हो सकते हैं, पीढ़ियां बदल सकती हैं, लेकिन मानवता के लिए किया गया निस्वार्थ सेवा-कार्य कभी पुराना नहीं होता।





पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव'

परमार्थ ही खोलेगा मोक्षद्वार

सनातन परम्परा में जीवन निर्वाह के चार प्रमुख अंग हैं। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष। इनमें भी धर्म को वरीयता दी गई है। इसलिए कि यदि जीवन में धर्म की उपस्थिति ही नहीं होगी तो अर्थ, काम और मोक्ष के द्वार भी नहीं खुल पाएंगे।

बंधुओं! परोपकार ऐसा माध्यम है, जिससे धर्म का अवलम्बन पाकर व्यक्ति संसार में आने की सार्थकता सुनिश्चित कर सकता है। हमारे शास्त्रों और मनीषियों का भी यही कहना है कि जो लोग अपने भीतर दूसरों पर उपकार का भाव सहेजे होते हैं, उनके जीवन की कठिन राहें स्वतः आसान बन जाती हैं। अन्न, जल, वस्त्र और औषधदान श्रेष्ठ माना गया है। दीन–दुःखियों की सेवा में समय के दान का भी बड़ा महत्व है। जो लोग दूसरों की पीड़ा को जब स्वयं अनुभव करते हैं, तब उनके हाथ सेवा के लिए स्वतः बढ़ जाते हैं। ऐसा होने पर उनका जीवन भी कल्याणकारी मार्ग की ओर अग्रसर हो जाता है।

इस संबंध में एक प्रसंग स्मृति–पटल पर उभर रहा है। एक उद्यमी के पास काफी धन था, वह ब्याज पर कर्ज का धंधा करता था। कस्बे का लगभग हर परिवार उसका कर्जदार था। यही वजह थी कि जिस राह से भी वह गुजरता लोग झुककर उसका अभिवादन करते। इससे उसमें अहंकार ने डेरा डाल दिया। मित्रों, अहंकार पकड़ में न आने वाली बीमारी है, जिसकी कोई भौतिक दवा भी नहीं। यह व्यक्तित्व को खत्म कर देती है।

एक दिन उसने अपने बचपन के मित्र राजपुरोहित को भोजन के लिए अपने घर आमंत्रित किया। भोजन के बाद उद्यमी ने राजपुरोहित को एक पोटली भेंट करते हुए कहा कि एक लाख मुद्राएँ आपको सादर समर्पित हैं। यहां भी अहंकार उस पर हावी था। राजपुरोहित उसका मुँह ताकने लगा, तभी वह बोला– "राजपुरोहितजी, इतनी बड़ी धनराशि तो राजा से भी शायद ही आपको कभी मिली होगी।" राजपुरोहित सहृदय, निर्लोभी और परोपकारी स्वभाव का था। उसने उत्तर दिया–"बंधुवर! आपने घर बुलाकर सम्मान दिया, आभारी हूँ, किन्तु इस राशि का मैं क्या करूँगा?" तभी उद्यमी बोल पड़ा –"आपको तो बस इतना ही करना है कि राजदरबार में इस वर्ष होने वाले समारोह में मुझे 'दानवीर' सम्मान दिलवा दें।"

राजपुरोहित ने तत्काल अपनी जेब में हाथ डाला और एक सिक्का निकालकर पोटली पर रख उसे पुनः उद्यमी को लौटा दिया। उसने कहा–"मित्र! इस राशि के पात्र वे हैं, जो जरूरतमंद हैं। इस धन से आप निराश्रित, अपाहिज, पीड़ित और गरीब परिवारों पर खर्च करें। आप और आपका यह धन सार्थक हो जाएगा। तब 'सम्मान' स्वतः आपके घर दस्तक देगा। सम्मान माँगा नहीं जाता। वह तो आपके अपने आचरण और सत्कर्मों से स्वतः मिल जाता है।"

उसने आगे कहा–"दूसरों की थकान व भूख मिटाने के लिए ही वृक्ष फलते हैं। नदियाँ कभी अपना जल स्वयं ग्रहण नहीं करतीं। वे दूसरों की प्यास बुझाने के लिए अविरल बहती हैं। यही उनका धर्म है। इसलिए वे पूजनीय हैं। आप भी आज से ही सेवा का संकल्प लें। आपके सम्मान के लिए दुआओं में अनेकानेक हाथ उठ जाएंगे।"▪▪▪





एक दीप अपने लिए एक किसी और के लिए

8 नवम्बर 2026

दीपावली आए और आंगन में दीप न जले, ऐसा भला कैसे हो सकता है? लेकिन भारतीय परंपरा में दीपावली केवल घर–आंगन सजाने का ही पर्व नहीं है। यह उस चेतना का उत्सव है, जो अंधकार को चुनौती देती है और मनुष्य को 'तमसो मा ज्योतिर्गमय'अंधकार से प्रकाश की ओर बढ़ने का संदेश देती है।

वेदों और भारतीय दर्शन में प्रकाश ज्ञान, मंगल और चेतना का प्रतीक रहा है। इसलिए दीपावली का दीप जितना बाहर रोशनी करता है, उससे कहीं अधिक भीतर की कालिमा को दूर करने का संदेश देता है। सवाल बस इतना है कि हमारे घर की चौखट पर जलने वाले दीप का प्रकाश क्या पड़ोसी की अंधेरी चौखट तक भी पहुंच रहा है?

जब हम अपने घरों को झालरों और दीपों से सजा रहे होंगे, उसी समय समाज में ऐसे भी घर होंगे, जहां त्योहार दस्तक तो देता है, लेकिन अभाव के कारण उसकी खुशी भीतर प्रवेश नहीं कर पाती। किसी मजदूर की झोपड़ी, किसी निर्धन परिवार का छोटा–सा घर, किसी आदिवासी बस्ती की कच्ची दीवारें या किसी दिव्यांग परिवार के संघर्षरत जीवन तक भी दीपावली की रोशनी पहुंचना जरूरी है।

नारायण सेवा संस्थान का दीपावली संकल्प इसी सोच से जुड़ा है। सेवा की रोशनी वहां पहुंचे, जहां जरूरत सबसे अधिक है। संस्थान निर्धन, मजदूर, आदिवासी और दिव्यांग भाई–बहनों के घरों में खुशियों की किरण पहुंचाने के लिए संकल्पित है।

आखिर त्योहार की सार्थकता केवल यह नहीं कि हमारे घर में कितने दीप जले, बल्कि यह भी है कि हमारे प्रयत्न रूपी एक दीप से कितनों के जीवन में उजाला हुआ।

इस दीपावली आइए, रोशनी को अपनी दीवारों तक सीमित न रखें। एक दीप अपने लिए जलाएं और एक उस परिवार के लिए, जिसकी आंखें आज भी उजाले की राह देख रही हैं।

जिस रोशनी में किसी और का अंधेरा मिट जाए, वही रोशनी वास्तव में दीपावली है।

सेवा की रोशनी हर घर तक...





सिलाई के हुनर से आत्मनिर्भरता

ऋषभदेव, खेरवाड़ा की रहने वाली सोनू मीणा को बचपन से ही सिलाई का शौक था। पढ़ाई के कारण वह अपने इस शौक को समय नहीं दे पाईं। बीए की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें अपने हुनर को सीखने का अवसर मिला और उन्होंने नारायण सेवा संस्थान में तीन माह के सिलाई प्रशिक्षण पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया।

प्रशिक्षण के दौरान सोनू ने ब्लाउज, कुर्ते, धोती–पायजामा सहित विभिन्न परिधानों की सिलाई सीखी। प्रशिक्षिका के मार्गदर्शन में उन्होंने सिलाई की बारीकियां समझीं और धीरे–धीरे अपने काम में आत्मविश्वास हासिल किया। वर्तमान में वह ब्लाउज सिलाई का अभ्यास कर रही हैं। यह प्रशिक्षण सोनू के लिए बचपन के शौक को हुनर में बदलने का अवसर बना है। अब वह सीखे हुए हुनर को आगे बढ़ाकर अपनी खुद की सिलाई की दुकान खोलना चाहती हैं और आत्मनिर्भर बनकर अपने पैरों पर खड़ा होना चाहती हैं।

सोनू कहती हैं, "नारायण सेवा संस्थान में मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मैं सभी दानदाताओं का हृदय से धन्यवाद करती हूं, जिन्होंने मुझे सिलाई सीखने में सहयोग दिया। अब मेरा सपना अपनी सिलाई की दुकान खोलकर आत्मनिर्भर बनना है।"



सोनू की नई शुरुआत बताती है कि हुनर सीखने का अवसर जीवन में आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की नई राह खोल सकता है।

छह ऑपरेशन के बाद परसन को मिला अपने पैरों पर चलने का सुख

कुशीनगर, उत्तर प्रदेश के भठही बुजुर्ग गांव के 22 वर्षीय परसन कुमार जन्मजात क्लबफुट (पैर मुड़े होने) की समस्या से पीड़ित थे। बचपन से ही चलने–फिरने में भारी कठिनाई के बावजूद, परसन ने हिम्मत नहीं हारी। उन्होंने स्नातक तक पढ़ाई पूरी की और परिवार को आर्थिक सहारा देने के लिए प्राइवेट नौकरी भी शुरू की। इस संघर्ष में उनके माता–पिता का लगातार संबल बना रहा।

स्थानीय जिला अस्पताल में इलाज से स्थायी लाभ न मिलने पर, एक मित्र की सलाह से परसन 17 अक्टूबर 2025 को उदयपुर स्थित नारायण सेवा संस्थान पहुंचे। जहां विशेषज्ञ डॉक्टरों की देखरेख में उनके पैरों के कुल छह ऑपरेशन किए गए। परसन के धैर्य और डॉक्टरों के प्रयास से 17 अगस्त 2026 को उनका अंतिम ऑपरेशन पूरी तरह सफल रहा।

आज परसन सीधे पैरों से आत्मविश्वास के साथ चल पा रहे हैं। इस सफलता से उनकी मां मालती देवी, पिता बुनेला प्रसाद, भाई राम भरोसा और बहन प्रतिभा बेहद खुश हैं। संस्थान के प्रति आभार जताते हुए परसन कहते हैं कि यह स्थान दिव्यांगों के लिए एक वह वरदान है, जहां निःशुल्क और गुणवत्तापूर्ण इलाज से नया जीवन मिलता है। परसन की कहानी साबित करती है कि परिवार के सहयोग, शिक्षा और दृढ़ इच्छाशक्ति के बल पर हर शारीरिक चुनौती को पार किया जा सकता है।

नारायण लिंब ने लौटाई चलने की उम्मीद

उत्तर प्रदेश के बिजनौर निवासी शहजाद ने बचपन में ही पिता का साया खो दिया था। मां ने कठिन परिस्थितियों में उनका पालन–पोषण किया। अभावों के बीच भी जिंदगी किसी तरह आगे बढ़ रही थी। युवा होने पर शहजाद रोजगार की तलाश में देहरादून पहुंचे, जहां उन्हें फर्नीचर का काम मिल गया। यहां से होने वाली आमदनी से घर का गुजारा चलने लगा। एक दिन काम पर लौटने के लिए शहजाद घर से देहरादून जा रहे थे। स्टेशन पहुंचे तो ट्रेन चल चुकी थी। वह चलती ट्रेन की ओर दौड़े और उसे पकड़ने की कोशिश की, लेकिन हाथ छूट गया। इस हादसे में उन्होंने अपने दोनों पैर गंवा दिए। हादसे ने शहजाद की जिंदगी पूरी तरह बदल दी। रोजगार छूट गया और परिवार का सहारा बनने का सपना भी जैसे टूट गया। वह बताते हैं, "मेरी मां ने मेरी बहुत देखभाल की है। उनकी तकलीफ देखकर मुझे बहुत दर्द होता था। कई बार लगा कि अब जिंदगी में कुछ नहीं बचा।"इसी बीच सोशल मीडिया के माध्यम से नारायण सेवा संस्थान के बारे में जानकारी मिली। मां उन्हें संस्थान लेकर आईं। यहां शहजाद को फिर से उम्मीद की एक किरण दिखाई दी। संस्थान की टीम ने उनके पैरों का माप लेकर जापान और जर्मन तकनीक से निर्मित नारायण मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिम्ब तैयार किए। कृत्रिम पैर पहनाने के बाद उन्हें चलने–फिरने का प्रशिक्षण भी दिया गया।





अब शहजाद दोबारा अपने पैरों पर खड़े होकर आगे बढ़ने की तैयारी कर रहे हैं। वह कहते हैं, मैं दिल से नारायण सेवा संस्थान का शुक्रिया अदा करता हूं। मेरी मां भी अब बहुत खुश हैं। अब मैं उनका सहारा बनूंगा। शहजाद के लिए यह सिर्फ कृत्रिम पैर मिलने की खुशी ही नहीं, बल्कि मां के लिए अपने पैरों पर खड़े होकर जिंदगी को नए सिरे से शुरू करने का अदम्य हौसला भी है।

दु:ख भरे दिन बीते–

47वें सामूहिक विवाह में 50 निर्धन-दिव्यांग जोड़ों की बनी गृहस्थी

किसी के चेहरे पर बरसों की प्रतीक्षा के बाद मिली मुस्कान थी, तो किसी की आंखों में आने वाले कल का सपना। पीले परिधानों में सजे 50 जोड़े जब पीले ही फूलों से सजे मंच पर साथ थे, तो लगा, जैसे संघर्षों की लंबी राह पीछे छूट गई और जिंदगी ने सुख और संतोष का बासंती रंग ओढ़ लिया है। किसी के लिए यह अकेलेपन से उबरकर आगे बढ़ने का दिन था, तो किसी के लिए अभावों के बीच अपने घर–आंगन का सपना सच होने का। सेवा, संवेदना और नए जीवन की उम्मीद से भरे इसी भाव के बीच नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ, लियों का गुड़ा परिसर में दो दिवसीय (19/20 सितम्बर) 47वां निःशुल्क दिव्यांग एवं निर्धन युवक–युवतियों का सामूहिक विवाह समारोह उल्लास और आत्मीयता के साथ सम्पन्न हुआ।



गणपति वंदन से मंगलारंभ

विवाह समारोह का शुभारंभ 19 सितम्बर प्रातः शुभ मुहूर्त में गणपति स्थापना और 'घर में पधारो गजानंद जी' की नृत्य वंदना के साथ हुआ।



अब सुख आयो रे...





हल्दी-मेहंदी

पारंपरिक रस्मों ने पूरे परिसर को उत्सव के रंग में रंग दिया। प्रातः 11:15 बजे सभी जोड़े मंचासीन हुए। संस्थान के संस्थापक– चेयरमैन परम पूज्य गुरुदेव श्री कैलाश जी 'मानव', सहसंस्थापिका श्रीमती कमला देवी जी, अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी एवं निदेशक श्रीमती वंदना जी ने विशिष्ट अतिथियों के साथ गणपति स्थापना कर समारोह का विधिवत शुभारंभ किया।

गीतों पर अतिथियों ने उत्साह से नृत्य किया। ढोलक की थाप, वैवाहिक गीतों की मधुर धुन पर नृत्य और हंसी–खुशी के बीच परिसर में उत्सव जीवंत हो उठा।

सेवा मनीषी सम्मान

समारोह में मुख्य अतिथि भारतीय सेना के पूर्व कमांडर बी.एल. बंधन जी (आगरा) एवं राजेश कंजानी जी (अर्जेंटीना) सहित सेवा मनीषियों का संस्थान के संस्थापक– चेयरमैन पूज्य श्री कैलाश जी 'मानव', अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया, निदेशक श्रीमती वंदना जी व ट्रस्टी श्री जगदीश जी आर्य ने पगड़ी, उपरना एवं स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया। जोधपुर के स्वतंत्रता सेनानी परिवार की श्रीमती सुशीला जी परिहार भी सम्मानित होने वालों में थीं।

महिला संगीत में संस्कृति के रंग

पहले दिन की संध्या महिला संगीत एवं नृत्य के नाम रही। वैवाहिक गीतों की मधुर धुनों के बीच राधा–कृष्ण रास, रुद्रावतार हनुमान, मां दुर्गा के नवस्वरूप तथा अयोध्यापति श्रीराम पर आधारित नृत्य–नाटिकाओं ने भारतीय संस्कृति के विविध रंगों को साकार किया।

'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी' अवलोकन

समारोह में आए सभी अतिथियों ने नारायण सेवा संस्थान के नवनिर्मित भवन 'वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी' का भी अवलोकन किया। उन्होंने संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों को करीब से देखा तथा उपचाररत रोगियों से संवाद कर उनके अनुभव जाने। अतिथियों ने संस्थान की ओर से दिव्यांगजन एवं जरूरतमंदों के लिए किए जा रहे सेवा और पुनर्वास कार्यों की प्रशंसा की।



साजन के घर चली डोलियां

दूसरे दिन 20 सितम्बर को जब नव युगल ने विवाह मंडप में एक–दूसरे का हाथ थामकर सात फेरे लिए, तो उनकी दिव्यांगता की पीड़ा पीछे छूट गई और सामने था–साथ, सम्मान और अपना घर बसाने का सपना।



जहां मिला जीवन, वहीं मिला जीवनसाथी

अब तक के विवाहों की सबसे खास और भावुक कर देने वाली बात यह रही कि अनेक दिव्यांग वर–वधुओं का निःशुल्क उपचार, ऑपरेशन, कृत्रिम अंग अथवा सहायक उपकरण और कौशल प्रशिक्षण नारायण सेवा संस्थान में हुआ। कभी इलाज और पुनर्वास के लिए पहुंचे इन युवक–युवतियों ने उसी परिसर में गृहस्थी बसाने की ओर कदम बढ़ाया।

सात फेरों के साथ नई शुरुआत

नवदंपतियों को घर बसाने के लिए आवश्यक गृहस्थी सामग्री भी प्रदान की गई। इसमें पलंग, बिस्तर, अलमारी, गैस चूल्हा–सिलेंडर, किचन सेट, प्रेशर कुकर, तवा–कढ़ाई, पंखा, सिलाई मशीन, ट्रॉली बैग सहित दैनिक उपयोग की सामग्री शामिल रही। जरूरत के अनुसार व्हीलचेयर और अन्य सहायक उपकरण भी दिए गए।

किसी नववधू के चेहरे पर नए घर की खुशी थी तो किसी दूल्हे की आंखों में आत्मनिर्भर भविष्य का भरोसा। गृहस्थी के सामान के साथ विदा हुए इन जोड़ों के साथ सिर्फ उपहार ही नहीं, बल्कि जीवन को अपने तरीके से जीने का विश्वास भी था।



समानता का संदेश

वैदिक मंत्रोच्चार, भजन–कीर्तन और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच यह विवाह समारोह संपन्न हुआ। संत–महात्माओं, समाजसेवियों, जनप्रतिनिधियों और देश–विदेश से आए अतिथियों ने नवदंपतियों को आशीर्वाद दिया। कई अतिथि कन्यादान में सहभागी बने।

भारत में इस समय 2.61 करोड़ दिव्यांगजन हैं, जिन्हें आज भी अनेक सामाजिक बाधाओं और पुरानी धारणाओं का सामना करना पड़ता है। लोगों का ध्यान अक्सर व्यक्ति की दिव्यांगता पर जाता है, उसकी क्षमताओं पर नहीं। इस विवाह समारोह में ऐसे जोड़े भी थे, जिनमें किसी दिव्यांग ने सक्षम को और किसी सक्षम ने दिव्यांग को अपना जीवनसाथी बनाया। ऐसे जोड़ों और उनकी सोच को नमन है, जिन्होंने सामाजिक धारणाओं से ऊपर उठकर जीवन साथी चुना।

पिछले 22 वर्षों में संस्थान के माध्यम से 2,582 दिव्यांग युवक-युवतियों के विवाह संपन्न कराए जा चुके हैं। संस्थान का उद्देश्य दिव्यांगजनों को दया नहीं, बल्कि सम्मान, अवसर और सुरक्षित भविष्य उपलब्ध कराना है। सेवक प्रशांत भैया





दिव्यांगता की राह में मिला जीवनसाथी

मेहसाणा के खरासड़ा निवासी हरीश कुमार सोलंकी और अहमदाबाद निवासी पुष्पा कुमारी परमार दोनों दिव्यांग हैं। जीवन की चुनौतियों के बीच दोनों ने आत्मसम्मान के साथ आगे बढ़ने का प्रयास जारी रखा। परिस्थितियों ने अकेले सफर को कठिन जरूर बनाया, लेकिन जीवनसाथी के रूप में एक–दूसरे का साथ मिला तो जिंदगी में नई उम्मीद जगी।

नारायण सेवा संस्थान के प्रयासों से दोनों परिवारों का संपर्क हुआ और विवाह की राह आसान हुई। आपसी समझ और परिवारों की सहमति के बाद हरीश और पुष्पा ने एक–दूसरे को जीवनसाथी के रूप में स्वीकार किया। इस 47वें दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह में दोनों विवाह के पवित्र बंधन में बंधे।

विवाह के बाद हरीश और पुष्पा एक-दूसरे का सहारा बनकर जीवन की नई शुरुआत कर रहे हैं। दोनों के लिए यह विवाह केवल रिश्ते का बंधन नहीं, बल्कि जीवन की चुनौतियों के बीच साथ निभाने और आत्मनिर्भर होकर आगे बढ़ने की नई शुरुआत है।



साथ शुरू हुई नई जिंदगी

दिव्यांगता को पीछे छोड़ साथ चलने का संकल्प



जीवन में सबसे बड़ी शक्ति है-साथ, विश्वास और प्रेम

बांसवाड़ा के ग्रामीण क्षेत्र निवासी गौतम लाल मैदा दोनों पैरों से दिव्यांग हैं, जबकि धूली कुमारी एक पैर से दिव्यांग हैं। जीवन की चुनौतियों ने दोनों के सामने कई कठिनाइयाँ रखीं, लेकिन उन्होंने हौसला नहीं छोड़ा और अपने जीवन को बेहतर बनाने की उम्मीद कायम रखी।

नारायण सेवा संस्थान के प्रयासों से दोनों के जीवन में नई शुरुआत का अवसर आया। 47वें दिव्यांग एवं निर्धन सामूहिक विवाह समारोह में गौतम लाल मैदा और धूली कुमारी ने पवित्र अग्नि के सात फेरे लिए। दोनों ने एक–दुसरे का साथ स्वीकार करते हुए जीवन की आगे की राह हम कदम होकर चलने का संकल्प लिया।

अब गौतम लाल और धूली एक–दूसरे का सहारा बनकर दिव्यांगता की चुनौतियों का सामना करेंगे। उनका विवाह केवल दो शरीरों का मिलन नहीं, बल्कि आत्मसम्मान और नए विश्वास के साथ आगे बढ़ने की शुरुआत है। दोनों उम्मीदों के साथ अपने नए जीवन की ओर बढ़ रहे हैं।





लखनऊ शिविर में पहुंचे
550 से अधिक दिव्यांगजन

नारायण सेवा संस्थान के तत्वावधान में 13 सितम्बर को लखनऊ में गोमती नगर स्थित दयाल गेटवे होटल में विशाल निःशुल्क दिव्यांग शल्य चिकित्सार्थ जांच–चयन एवं नारायण लिम्ब मेजरमेंट शिविर सम्पन्न हुआ। जिसमें 550 से अधिक दिव्यांगजनों का पंजीयन हुआ। जांच के बाद 301 को कृत्रिम अंग, 153 को कैलीपर्स उपलब्ध कराने तथा 40 दिव्यांगजनों को निःशुल्क शल्य चिकित्सा के लिए चयनित किया गया। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि उत्तर प्रदेश भाजपा के उपाध्यक्ष श्री नीरज सिंह जी एवं विधान परिषद सदस्य श्री पवन सिंह जी चौहान ने दीप प्रज्वलित कर किया। विशिष्ट अतिथियों के रूप में एमएलसी श्री मुकेश जी शर्मा, हेल्प यू एजुकेशनल एंड चेरिटेबल ट्रस्ट के संस्थापक डॉ. हर्षवर्धन जी अग्रवाल, सहायक आयुक्त सीएसआर श्री आनंद कुमार जी पांडेय, अराइज कंपनी के प्रबंध निदेशक श्री अभिनन्दन सिंह जी, सामाजिक कार्यकर्ता श्री राजेन्द्र जी बड़ोला, सीएमएचओ डॉ. मनोज कुमार जी, इनरव्हील क्लब की अध्यक्ष श्रीमती कविता जी अग्रवाल एवं समाजसेवी श्रीमती प्रतिभा जी श्रीवास्तव श्री सुनील कुमार जी सिन्हा, श्री जुगल किशोर जी, श्री बृजेश जी गुप्ता व श्री अनिल जी श्रीवास्तव सहित बड़ी संख्या में गणमान्य मौजूद रहे। प्रारंभ में संस्थान के ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए संस्थान की निःशुल्क सेवा गतिविधियों की जानकारी दी। मुख्य अतिथि श्री नीरज सिंह ने कहा कि नारायण सेवा संस्थान के सेवा कार्यों को देखने का उन्हें पहले भी अवसर मिला है। दिव्यांगजनों की निःशुल्क शिक्षा, चिकित्सा एवं रोजगार के क्षेत्र में संस्थान द्वारा किया जा रहा कार्य ईश्वर आराधना के समान है। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री मुकेश शर्मा जी ने कहा कि इस प्रकार की निःशुल्क एवं निःस्वार्थ सेवा को समाज के सहयोग से और व्यापक स्तर पर आगे बढ़ाया जाना चाहिए। शिविर प्रभारी श्री हरिप्रसाद जी लड्ढा ने आभार ज्ञापन एवं संयोजन श्री जितेन्द्र जी शर्मा ने किया।



अहमदाबाद में 335 दिव्यांगजनों को मिले कृत्रिम अंग

मानवीय संवेदना से परिपूर्ण सेवा : राज्यपाल जी

किसी के चेहरे पर लंबे इंतजार के बाद फिर से चल पाने का उत्साह तो किसी परिवार की आंखों में अपने प्रियजन को फिर से अपने पैरों पर खड़ा देख बहते आंसू। गुजरात विश्वविद्यालय, अहमदाबाद के अटल–कलाम कैंपस लेन, नवरंगपुरा में 6 सितम्बर को आयोजित नारायण सेवा संस्थान के कृत्रिम अंग फिटमेंट शिविर में सेवा, तकनीक और संवेदना का ऐसा ही दृश्य देखने को मिला। संस्थान एवं सीएसआर पार्टनर इंगरसोल रैंड इंडिया लिमिटेड के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित शिविर में 271 दिव्यांगजनों को 291 नारायण मॉड्यूलर कृत्रिम अंग तथा 64 दिव्यांगजनों को 87 कैलिपर्स एवं अन्य सहायक उपकरण निःशुल्क प्रदान किए गए। शिविर का उद्घाटन मुख्य अतिथि गुजरात के राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी ने किया। उन्होंने कहा कि नारायण सेवा संस्थान के सेवा कार्य संवेदना और समर्पण से परिपूर्ण मनुष्य जीवन के लिए प्रेरणादायी हैं। यह आयोजन तकनीक और नर सेवा नारायण सेवा के सुंदर संगम के साथ दिव्यांगजनों के जीवन में उम्मीद और आत्मनिर्भरता की नई शुरुआत है। जापान एवं जर्मन तकनीक को सेवा–भाव से जोड़कर संस्थान ने साबित किया है कि आधुनिक तकनीक का सबसे बड़ा उद्देश्य मानव जीवन को बेहतर बनाना होना चाहिए। उन्होंने संस्थापक पद्मश्री श्री कैलाश जी 'मानव' के सेवा–संकल्प और अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी के संवेदनशील नेतृत्व की सराहना की।

शिविर की अध्यक्षता इंगरसॉल रैंड इंडिया लिमिटेड के चेयरमैन एवं प्रबंध निदेशक श्री सुनील जी खंडूजा ने की। विशिष्ट अतिथि गुजरात के पूर्व शिक्षा मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह जी चूड़ासमा रहे।

संस्थान की निदेशक श्रीमती वंदना जी अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि दिव्यांगजनों को केवल कृत्रिम अंग देना ही संस्थान का उद्देश्य नहीं, बल्कि उन्हें आत्मविश्वास के साथ आत्मनिर्भर बनाना भी प्राथमिकता है। उन्होंने बताया कि चयनित 335 लाभार्थियों को इस शिविर में कृत्रिम अंग, कैलिपर्स एवं सहायक उपकरण उपलब्ध कराए गए हैं। इस अवसर पर संस्थान संरक्षक श्री सत्यभूषण जी जैन, समाजसेवी श्री मदन लाल जी गुप्ता, श्री शैलेश चंद्र परमार जी, श्री नटवर भाई गज्जर जी, श्री सतीश भाई भाविस्कर जी, श्री वल्लभ भाई धनानी जी, श्री प्रदीप भाई जे. बचानी जी सहित अनेक गणमान्य नागरिक, समाजसेवी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे। संचालन श्री महिम जी जैन ने और आभार ज्ञापन ट्रस्टी–निदेशक श्री देवेंद्र जी चौबीसा ने किया।





प्रधानमंत्री के जन्मदिन पर दिल्ली में 76 दिव्यांगों को लगे कृत्रिम अंग

सेवा ही सच्चा राष्ट्र धर्म है। इसी भावना के साथ प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी जी के 76वें जन्मदिवस पर 17 सितंबर को नारायण सेवा संस्थान ने दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला प्रांगण में 76 दिव्यांग भाई–बहनों को निःशुल्क मॉड्यूलर आर्टिफिशियल लिंब प्रदान किए। जापान और जर्मन तकनीक से बने ये हल्के, मजबूत और सहज कृत्रिम अंग उनके जीवन में नई गति और आत्मनिर्भरता का संचार करने वाले हैं।



विशेषज्ञ चिकित्सकों एवं तकनीशियनों ने कृत्रिम अंगों के फिटमेंट के साथ लाभार्थियों को आवश्यक फिजियोथेरेपी और इनके उपयोग का प्रशिक्षण भी दिया। जब लंबे समय से दूसरों के सहारे चलने वाले लाभार्थी पहली बार स्वयं खड़े हुए और बिना सहारे कदम बढ़ाए, तो पूरा वातावरण भावुक हो उठा। प्रधानमंत्री जी के जन्मदिन पर उनके चेहरों पर आई मुस्कान सेवा की सार्थकता बयां कर रही थी।

शिविर के मुख्य अतिथि केंद्रीय सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. वीरेंद्र कुमार खटीक जी ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी जी ने शारीरिक दृष्टि से अक्षम भाई–बहिनों को 'दिव्यांग' संबोधन देकर उन्हें सम्मानजनक पहचान दिलाई तथा उनके जीवन को आसान बनाने और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की। उन्होंने संस्थान के सेवा कार्यों की सराहना करते हुए दिव्यांगजनों से संवाद किया। विशिष्ट अतिथि चांदनी चौक सांसद श्री प्रवीण खंडेलवाल जी, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष श्री किशोर मकवाना जी, एलिम्को के सीएमडी श्री प्रवीण कुमार जी एवं लव–कुश कमेटी अध्यक्ष श्री अरुण गोयल जी ने भी विचार व्यक्त किए। शिविर का शुभारंभ दीप प्रज्वलन से हुआ। संस्थापक पद्मश्री कैलाश जी मानव एवं अध्यक्ष सेवक प्रशांत भैया जी का शुभकामना संदेश प्रसारित किया गया। ट्रस्टी–निदेशक देवेंद्र चौबीसा जी ने स्वागत किया, जबकि समाजसेवी सत्यभूषण जी जैन ने अतिथियों को शिविर का अवलोकन कराया।



छोटी सी पहल बड़ी मुस्कान

हर छोटा प्रयास मायने रखता है। आपके द्वारा दी गई छोटी सी मदद भी किसी के जीवन में नई उम्मीद जगा सकती है। दूसरों के प्रति दयालु बनें और उन्हें यह महसूस कराएं कि वे अकेले नहीं हैं।

39739334
भोजन थाली वितरण

16540661
अन्न वितरण (किलो में)

27177330
वस्त्र वितरण संख्या

250567
स्कुल युनिफार्म वितरण सख्या

नारायण सेवा संस्थान के प्रयासों से

अखाड़े में चमके नन्हे सितारे

सुबह की शुरुआत पढ़ाई से होती है और दिन का एक हिस्सा कुश्ती के अभ्यास में बीतता है। किताबों के बीच भविष्य के सपने संजोने वाले ये बच्चे जब अखाड़े में उतरते हैं तो उनका आत्मविश्वास और मेहनत नजर आती है। नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के इन विद्यार्थियों ने 70वीं जिला स्तरीय विद्यालयी कुश्ती प्रतियोगिता (सत्र 2026–27) में अपने प्रदर्शन से विद्यालय का नाम रोशन किया। प्रतियोगिता में विद्यालय के छह विद्यार्थियों ने अलग–अलग भार वर्गों में पदक हासिल किए। कक्षा सातवीं के भावेश घांचा ने 55 किलोग्राम भार वर्ग में स्वर्ण पदक जीतकर सबसे आगे जगह बनाई। उनके शानदार प्रदर्शन के साथ ही उनका चयन राज्य स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ। कक्षा सातवीं के आदित्य गमेती ने 44 किलोग्राम भार वर्ग में रजत पदक हासिल किया। वहीं कक्षा छठी के खुशवंत सिंह, कक्षा पांचवीं के महेश गायरी, कक्षा छह की जया गमेती और कक्षा पांच की संध्या सेन ने अपने–अपने मुकाबलों में कांस्य पदक जीतकर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

इन बच्चों की कहानी केवल पदकों तक सीमित नहीं है। साधारण और आर्थिक रूप से कमजोर पारिवारिक परिस्थितियों से आने वाले इन विद्यार्थियों के लिए आगे बढ़ने का रास्ता हमेशा आसान नहीं रहा। फिर भी उन्होंने अपनी रुचि को पहचाना और उसे मेहनत के साथ हकीकत में बदला। नारायण चिल्ड्रन एकेडमी में उन्हें निःशुल्क शिक्षा के साथ अपनी खेल प्रतिभा को आगे बढ़ाने का अवसर मिला। पढ़ाई के साथ अभ्यास, अनुशासन और मार्गदर्शन ने उनके आत्मविश्वास को मजबूत किया। भावेश के लिए स्वर्ण पदक एक नए सफर की शुरुआत है। राज्य स्तर के लिए चयनित होकर अब वे अगले पड़ाव की तैयारी कर रहे हैं। उनका सपना एक सफल पहलवान बनना है। आदित्य भी रजत पदक के साथ आगे बढ़ने का संकल्प लिए हुए हैं। बाकी चार विद्यार्थियों ने कांस्य पदक हासिल कर यह दिखाया कि कम उम्र में मिली उपलब्धि आगे की मेहनत के लिए मजबूत आधार बन सकती है।

अखाड़े में जीते गए ये छह पदक केवल प्रतियोगिता के परिणाम नहीं है। बच्चों का सतत अभ्यास, अनुशासन और आगे बढ़ने की ललक भी है। किसी के हाथ में स्वर्ण है, किसी के पास रजत और किसी ने कांस्य से अपनी शुरुआत की है, लेकिन सभी की नजर इससे आगे की मंजिल पर है।

नारायण सेवा संस्थान द्वारा संचालित नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के ये नन्हे पहलवान आज कुश्ती के दांव-पेच सीख रहे हैं और अपने सपनों को आकार दे रहे हैं। इनके लिए हर मुकाबला एक नया अनुभव है और हर पदक आगे बढ़ते रहने की एक नई प्रेरणा।



आदित्य



भावेश

प्रकृति की ओर
एक स्वास्थ्य यात्रा



हांगकांग से नारायण सेवा संस्थान पहुंचीं संस्थान की सम्मानित दानदाता श्रीमती रीना सेठ के लिए यहां बिताए दस दिन स्वास्थ्य और नई ऊर्जा से भरी यादगार यात्रा बन गए। लंबे समय से घुटनों और कमर के दर्द से परेशान रीना जी ने संस्थान में प्राकृतिक चिकित्सा की विभिन्न प्रक्रियाओं का लाभ लिया।

फिजियोथेरेपी और व्यायाम

नियमित फिजियोथेरेपी के साथ प्रतिदिन मशीनों के माध्यम से व्यायाम कराया गया। नियमित अभ्यास से उनकी मोबिलिटी और फ्लेक्सिबिलिटी में सुधार महसूस हुआ तथा दर्द से भी राहत मिली।

प्राकृतिक उपचार की अन्य प्रक्रियाएं

वजन और शरीर में फैट को नियंत्रित करने के लिए मिट्टी का लेप, नाक के लाल रहने की समस्या के लिए नस्य क्रिया तथा स्टीम और स्टीम बाथ जैसी प्रक्रियाएं भी उपचार का हिस्सा रहीं।

प्रकृति का सहारा, स्वस्थ जीवन

पौष्टिक आहार और संतुलित दिनचर्या

साथ ही प्रतिदिन पौष्टिक आहार और संतुलित दिनचर्या का पालन किया गया।

दस दिनों के इस अनुभव में रीना जी ने अपने स्वास्थ्य में आए सकारात्मक बदलावों को महसूस किया। उपचार के साथ प्राकृतिक चिकित्सा और अनुशासित जीवनशैली को करीब से समझने का अवसर मिला। यह यात्रा उनके लिए स्वास्थ्य के प्रति नई जागरूकता, ऊर्जा और संतोष की सौगात बन गई।

भारत में संचालित संस्थान की शाखाएं

राजस्थान

पाली
श्री कान्तिलाल मूथा,
मो. 07014349307
31, गुलजार चौक, पाली मारवाड़
भीलवाड़ा
श्री शिव नारायण अग्रवाल
मो. 09829769960
C/â नीलकण्ठ पेपर स्टोर, L.N.T. रोड़, भीलवाड़ा–311001
बहरोड़
डॉ. अरविन्द गोस्वामी
मो. 09887488363
'गोस्वामी सदन' पुराने हॉस्पीटल के सामने बहरोड़, अलवर (राज.)
श्री भुवनेश रोहिल्ला, मो. 8952859514, लेडिज फैशन पोईन्ट, न्यू बस स्टैण्ड के सामने यादव धर्मशाला के पास, बहरोड़, अलवर
अलवर
श्री आर.एस. वर्मा
मो. 07300227428
के.वी. पब्लिक स्कूल, 35 लादिया, बाग अलवर
जयपुर
श्री नन्द किशोर बत्रा,
मो. 09828242497
5–C, उन्नति एन्क्लेव, शिवपुरी, कालवाड़ रोड़, झोटवाड़ा, जयपुर 302012
अजमेर
श्री सत्य नारायण कुमावत,
मो. 09166190962
कुमावत कॉलोनी, आर्य समाज के पीछे, मदनगंज, किशनगढ़, अजमेर
बूंदी
श्री गिरिधर गोपाल गुप्ता,
मो. 09829960811,
ए. 14, 'गिरधर–धाम', न्यू मानसरोवर कॉलोनी, चित्तौड़ रोड़, बून्दी

झारखण्ड

हजारीबाग
श्री डूंगरमल जैन
मो.–09113733141
ब्व पारस फूड्स, अखण्ड ज्योति ज्ञान केन्द्र, मेन रोड़ सदर थाना गली, हजारीबाग
रामगढ़
श्री जोगिन्दर सिंह जग्गी
मो. 7992262641
44ए, छोटकी मुरीम, नजदीक उमा इन्सीट्यूट राजीव सिनेमा रोड़, बिजुलिया, रामगढ़
धनबाद
श्री गोपाल कुमार खेडिया,
मो. 09608529923,
आजाद नगर भूलीनगर

मध्य प्रदेश

रतलाम
श्री चन्द्र पाल गुप्ता
मो. 09752492233,
मकान नं. 344, काटजूनगर, रतलाम
जबलपुर
श्री आर. के. तिवारी,
मो. 09926660739
मकान नं. 133, गली नं. 2, समदड़िया ग्रीन सिटी, माढ़ोताल, जिला – जबलपुर
भोपाल
श्री विष्णु शरण सक्सेना
मो. 09425050136
ए–3/302, विष्णु हाईटेक सिटी, अहमदपुर रेल्वे क्रोसिंग के सामने, बावड़िया कलाँ, होशंगाबाद रोड़ जिला – भोपाल
बखतगढ़
श्री सुरेन्द्र सिंह सोलंकी,
मो. 08989609714, बखतगढ,
त.–बदनावर, जि.–धार

महाराष्ट्र

आकोला
श्री हरिश जी,
मो. 09422939767
आकोट मोटर स्टेण्ड, आकोला
परभणी
श्रीमती मंजु दरड़ा
मो. 09422876343
नांदेड़
श्री विनोद लिंबा राठोड,
मो. 07719966739
जय भवानी पेट्रोलियम, मु. पो. सारखानी, किनवट, जिला – नांदेड़
पाचोरा
श्री सीताराम जी
मो. 09422775375
मुम्बई
श्रीमती रानी दुलानी
मो. 028847991, 9029643708, 10–बीध्बी, वाईसराय पार्क, ठाकुर विलेज कान्दीवली, मुम्बई
भायंदर
श्री कमलचंद लोढा,
मो. 8080083655 ए/103, 'देव आंगन' जैन मन्दिर रोड़ बावन जिनालय मन्दिर के पास, भायंदर (पश्चिम) ठाणे–401101

हिमाचल प्रदेश

हमीरपुर
श्री ज्ञानचन्द शर्मा,
मो. 09418419030
गाँव व पोस्ट–बिघरी, त. बदसर जिला हमीरपुर – 176040

श्री रसील सिंह मनकोटिया मो. 09418061161, जामलीधाम, पोस्ट–रोपा, जिला–हमीरपुर–177001

हरियाणा

कैथल
डॉ. विवेक गर्ग
मो. 9996990807
गर्ग मनोरोग एवं दांतो का हस्पताल के अन्दर पद्मा मॉल के सामने करनाल रोड़, कैथल
.....
श्री सतपाल मंगला
मो. 09812003662
3 68–ए, नई अनाज मंडी, कैथल
जुलाना मण्डी
श्री मनोज जिन्दल
मो. 9813707878
108 अनाज मण्डी, जुलाना, जींद
पलवल
श्री वीर सिंह चौहान
मो. 09991500251
विला नं. 228, ओमेक्स सिटी, सेक्टर–14, पलवल
फरीदाबाद
श्री नवल किशोर गुप्ता
मो. 09873722657
कश्मीर स्टेशनरी स्टोर, दुकान नं. 1डी/12, एन.आई.टी., फरीदाबाद, हरियाणा
करनाल
डॉ. सतीश शर्मा
मो. 09416121278
ओपीपी. गली नंबर 19, गोविंद डेयरी मेन रोड करण विहार नियर मेरठ रोड करनाल 132001
अम्बाला
श्री मुकुट बिहारी कपूर
मो. 08929930548
मकान नं.– 3791, ओल्ड सब्जी मण्डी, अम्बाला केन्ट–133001
नरवाना
श्री राजेन्द्र पाल गर्ग
मो. 09728941014 165–हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, नरवाना, जीन्द

गोवा

गोवा
श्री अमृत लाल दोषी,
मो. 07798917888
'दोषी निवास' जैन मन्दिर के पास, पजीफोन्ड, मडगांव गोवा–403601

गुजरात

अहमदाबाद
श्री योगेन्द्र प्रताप राघव,
मो. 09274595349
म.नं.रू बी–77, गोल्डन बंग्लो, नाना चिलोड़ा, अहमदाबाद

उत्तर प्रदेश

बरेली
श्री कुंवरपाल सिंह पुंढीर
मो. 9458681074
विकास पब्लिक स्कूल के पीछे, स्वरूप नगर (चहवाई) जिला–बरेली
श्री विजय नारायण शुक्ला मो. 7060909449,
मकान नं.22/10, सी.बी.गंज, लेबर इण्डस्टीयल कॉलोनी बरेली
हाथरस
श्री दास बृजेन्द्र,
मो.–09720890047
दीनकुटी सत्संग भवन, सादाबाद
हापुड़
श्री मनोज कंसल
मो.–09927001112,
डिलाइट टैन्ट हाऊस,
कबाड़ी बाजार,
हापुड़
गजरौला, अमरोहा
श्री अजय एवं श्रीमती आरती शर्मा
मो.–08791269705 बांके बिहारी सदन, कालरा स्टेट, गजरौला, अमरोहा–244235

छत्तीसगढ़

दीपका, कोरबा
श्री सूरजमल अग्रवाल
मो. 09425536801
.....
श्री देवनाथ साहू
मो. 09229429407
गांव– बेला कछार, मु.पो. बालको नगर, जिला–कोरबा
बिलासपुर
डॉ. योगेश गुप्ता,
मो.–09827954009
श्रीमन्दिर के पास, रिंग रोड़ नं. 2, शान्ति नगर, बिलासपुर
बालोद
श्री बाबूलाल संजयकुमार जैन
मो. 9425525000
रामदेव चौक बालोद
जिला–बालोद

जम्मू/कश्मीर

जम्मू
श्री जगदीश राज गुप्ता,
मो. 09419200395
गुरू आशीर्वाद कुटीर, 52–सी अपर शिव शक्ति नगर जम्मु–180001

दिल्ली

शाहदरा
श्री विशाल अरोड़ा
मो. 08447154011
श्रीमान रविशंकर जी अरोड़ा
मो.0 9810774473
मैसर्स शालीमार ड्राइक्लीनर्स
IV/1461 गली नं. 2 शालीमार पार्क, D.C.B. ऑफिस के पास, शाहदरा

नारायण दिव्यांग सहायता केन्द्र

महाराष्ट्र

मुम्बई

मो. 09529920090,07073452174
09529920088
शिवे सृष्टि सीएचएस लिमिटेड, बिल्डिंग नं. 4–बी, फ्लैट नंबर 608, बॉम्बे डाईंग महादा बोइवाड़ा, नयागांव, दादर (पूर्व) मुंबई (महाराष्ट्र) पिनकोड 400014

पूणे

मो. 09529920093
17/153 मेन रोड, गणेश सुपर मार्केट गोखले नगर, पूणे–16

दिल्ली

रोहिणी

मो. 08588835718
08588835719, बी–4/67, सेक्टर–8, रोहिणी, दिल्ली, पिन कोड 110085

जनकपुरी, नई दिल्ली

07023101167, 07412060406
सी2/287, 4 फ्लोर, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058

विकासपुरी, नई दिल्ली

मो. 09257017592
मकान नं. 342 ब्लॉक–सी, मद्रासी मन्दिर के पास विकासपुरी 110018

वेस्ट बंगाल

कोलकाता

09529920097, मकान नंबर–580, स्वामी सारणी ग्वाला, बागान, कालांदी, कोलकाता (पश्चिम बंगाल) पिनकोड 700048

हरियाणा

गुरूग्राम

मो. 08306004802,
हाउस नं.–1936 जीए, गली नं.–10, राजीव नगर ईस्ट, माता रोड़, सी. आर.पी.एफ. केम्प चौक, गुरुग्राम – 122001

हिसार

मो. 9257017593, मकान न. 2249, सेक्टर–14, हिसार 125001

रेवाड़ी

मो. 9257017594, C/o श्री ललित कुमार, गली नंबर 7, दूसरी मंजिल, विकास नगर, बुद्धपुर रोड, कुतुबपुर मोला, रेवाड़ी (हरियाणा) 123401

फरीदाबाद

मो. 7023101162, ई–10, नेहरू ग्राऊंड, बीकानेर स्वीट्स के पीछे, ऐन.आई.टी. फरीदाबाद पिनकोड 121001

पंजाब

लुधियाना

मो. 07023101153
311/312, बी–17, गुलाटी डांस क्लास के पास, भारत नगर, लुधियाना 141001

चण्डीगढ़

मो. 07073452176
मकान नंबर 3657, दूसरी मंजिल सेक्टर 46–सी, चंडीगढ़–160047

उत्तराखंड

हरिद्वार

मो.9229920089, एम–80, शिवलोक कॉलोनी, फेस–3, भेल रानीपुर, हरिद्वार (उत्तराखंड) 249401

उत्तर प्रदेश

मेरठ

मो. 07073474438
38, श्री राम पैलेस, दिल्ली रोड, नियर सब्जी मंडी, माधव पुरम, मेरठ

लखनऊ

मो. 09351230395, मकान नंबर 563/193, चित्रगुप्त नगर, आलमबाग (रसगन मिष्ठान भंडार के पास) लखनऊ (उ.प्र.) 226005

राजस्थान

जोधपुर

मो. 08306004821
जूनी बागर, महामन्दिर जोधपुर (राज) 342001

कोटा

मो. 07023101172
नारायण सेवा संस्थान, मकान नं. 2–वी–5 तलवंडी, कोटा (राज.) 324005

अजमेर

नारायण सेवा संस्थान C/O श्रीमती. कैलाश उपाध्याय पत्नी स्वर्गीय श्री विश्वप्रकाश उपाध्याय मकान नं. 68, माली मोहल्ला, आनासागर लिंक रोड, शिव मार्ग, कृष्णा गंज, अजमेर (राजस्थान) 305001
मो. नं. 9216022978

बिहार

पटना

मो. 09257110805, मकान नं.–23, किताब भवन रोड नॉर्थ एस.के. पुरी, पटना–13

गुजरात

सूरत

मो. 09529920082
27, सम्राट टाऊनशिप, सम्राट स्कूल के पास, परवत पाटीया, सूरत

वडोदरा

मो. 09529920081
मकान नंबर ए–2/5, सिद्धार्थ पार्क, साईदीप नगर के पास, टाटा एयरक्राफ्ट कॉम्प्लेक्स के सामने, न्यू वीआईपी रोड, बड़ौदा (गुजरात), पिनकोड 390022

अहमदाबाद

मो. 09529920080, 08306008208
07/ए, कपिलकुंज सोसायटी, विजय नगर के सामने, मेट्रो स्टेशन, नारायणपुरा, अहमदाबाद (गुजरात) पिनकोड 380013

(कर्नाटक)

बेंगलुरू

मो. 09341200200
हाउस नंबर 6/2, ग्राउंड फ्लोर, मुदलियार स्ट्रीट, ड्रेस सर्कल के पीछे, शॉपिंग मॉल, नुटकालाप्पा सर्कल, बसवनगुडी, बैंगलोर (कर्नाटक) 560004

मध्य प्रदेश

ग्वालियर

मो. 9216022976,मकान नंबर 197, कुंडी रोड, गली नंबर 05, कोटेश्वर कॉलोनी, कोटेश्वर मंदिर के सामने, गिर्द, ग्वालियर (म.प्र.) 474003

नारायण निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर

उत्तर प्रदेश

हाथरस

मो. 07023101169
एलआईसी बिल्डिंग के नीचे, अलीगढ़ रोड, हाथरस

मथुरा

मो. 07023101163
हाउस नं. 10/10ए, श्रद्धानंद स्कूल के सामने, राधा नगर, कृष्णा नगर, मथुरा (उत्तर प्रदेश) 281004

अलीगढ़

मो. 07023101169
एम.आई.जी. –48 विकास नगर, आगरा रोड़, अलीगढ़

तेलंगाना

हैदराबाद

मो. 09573938038
लीलावती भवन, 4–7–122/123 इसामिया बाजार, कोठी, संतोषी माता मंदिर के पास, हैदराबाद –500027

उत्तर प्रदेश

गाजियाबाद

मो. 07073474435
श्रीमती शीला जैन, निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेंटर, बी–350, न्यू पंचवटी, भाटिया मोड़ के पास, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश 201009

लोनी

मो. 9257110802
श्रीमती कृष्णा मेमोरियल निःशुल्क फिजियोथेरेपी सेंटर, 72, शिव विहार, लोनी बंथला, चिरोड़ी रोड (मोक्षधाम मंदिर), त्यागी अस्पताल के पास, लोनी के पास, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश 201102

आगरा

मो. 07023101174, मकान नंबर ई–52, किडजी स्कूल के पास, कमला नगर, आगरा (उ.प्र.) 282005

छत्तीसगढ़

रायपुर

मो. 07869916950, 08306004806
मीरा जी राव, म.नं.–29/500 टीवी टावर रोड, गली नं.–2, फेस–2 श्रीरामनगर, पो.–शंकरनगर,रायपुर

गुजरात

राजकोट

मो. 09529920083
बी–33, शिव शक्ति कोलोनी, जेटको टावर के सामने, यूनिवर्सिटी रोड, राजकोट 360005

उत्तराखण्ड

देहरादून

मो. 07023101175
साई लोक कॉलोनी, गांव कार्बरी ग्रांट, शिमला बाय पास रोड, देहरादून 248007

दिल्ली

फतेहपुरी

मो. 08588835711, 07073452155
6473 कटरा बरियान, अम्बर होटल के पास, फतेहपुरी, दिल्ली–6

शाहदरा

मो. 07073474435, बी–85, ज्योति कोलोनी, दुर्गापुरी चौक, शाहदरा

हरियाणा

अम्बाला

मो. 07023101160
सविता शर्मा, 669, हाऊसिंग बोर्ड कोलोनी अरबन स्टेट के पास, सेक्टर–7 अम्बाला

कैथल

मो. 08696002432
फ्रेंड कॉलोनी, गली नम्बर 3 करनाल रोड़, हनुमान वाटिका के पास कैथल (हरियाणा)

राजस्थान

जयपुर

मो. 09928027946, 09257110807
बद्रीनारायण वैद फिजियोथेरेपी हॉस्पीटल एण्ड रिचर्स सेन्टर बी–50–51 सनराईज सिटी, मोक्ष मार्ग, निवारू झोटवाड़ा, जयपुर

मध्य प्रदेश

इन्दौर

मो. 09529920087
43, चन्द्रलोक कॉलोनी खजराना रोड, इंदौर–452018

अपने परिचितों, परिजनों अथवा स्वयं के जन्मोत्सव, वैवाहिक वर्षगांठ के साथ पुण्यात्माओं की पुण्यतिथि को बनाएं यादगार...

जन्मजात पोलियोग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000 रू.	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000 रू.
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000 रू.	13 ऑपरेशन के लिए	52,500 रू.
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000 रू.	5 ऑपरेशन के लिए	21,000 रू.
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000 रू.	3 ऑपरेशन के लिए	13,000 रू.
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000 रू.	1 ऑपरेशन के लिए	5,000 रू.

दुर्घटनाग्रस्त अंगविहीन एवं दिव्यांगों को दें कृत्रिम अंग का उपहार

वस्तु	एक नग सहयोग	तीन नग सहयोग	पांच नग सहयोग	ग्यारह नग सहयोग
कृत्रिम अंग (हाथ-पैर)	10,000 रू.	30,000 रू.	50,000 रू.	1,10,000 रू.
तिपहिया साईकिल	5,000 रू.	15,000 रू.	25,000 रू.	55,000 रू.
व्हील चेयर	4,000 रू.	12,000 रू.	20,000 रू.	44,000 रू.
कैलिपर	2,000 रू.	6,000 रू.	10,000 रू.	22,000 रू.
वैशाखी	500 रू.	1,500 रू.	2,500 रू.	5,500 रू.

दो जून की रोटी के लिए बेबस निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन-नाश्ता सहयोग मित्ति (वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग एवं निर्धनों के लिए सहयोग हेतु मदद)	
नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37,000 रू.
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30,000 रू.
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15,000 रू.
नाश्ता सहयोग राशि	7,000 रू.

आशा की नई उड़ान रखने वाले दिव्यांगजनों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल/कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	7,500 रू.	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	22,500 रू.
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	37,500 रू.	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	75,000 रू.
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	1,50,000 रू.	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि	2,25,000 रू.

नारायण चिल्ड्रन एकेडमी के बच्चों के सपनों को करें साकार

1 एक बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	11,000/-
5 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	55,000/-
20 बालक का 1 वर्ष का शिक्षा सहयोग	2,20,000/-

Bank Name : State Bank of India
Account Name : Narayan Seva Sansthan
Account Number : 31505501196
IFSC Code : SBIN0011406
Branch : Hiran Magri, Sector No.4, Udaipur-313001

Donate via UPI

Google Pay PhonePe Paytm

narayanseva@sbi

अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान के नाम से संस्थान के खाते में जमा करवाकर हमें सूचित करें

बच्चे का कल आपके हाथों में है!

कुछ बच्चे जन्म के साथ ही ऐसी कुछ चुनौतियाँ लेकर आते हैं,जिनका बचपन कदम बढ़ाने से पहले ही ठिठक जाता है। लेकिन सही उपचार, सर्जरी और समाज का संवेदनशील सहयोग उनके नन्हे कदमों को ताकत और नई राह दे सकता है।

जन्मजात दिव्यांग बच्चों को आवश्यक शल्य चिकित्सा के माध्यम से स्वस्थ, आत्मनिर्भर और सम्मानपूर्ण जीवन की ओर बढ़ाने के इस प्रयास में आपका सहयोग सादर अपेक्षित है।

1 ऑपरेशन के लिए ₹ 5,000/-



आइए, किसी बच्चे की मजबूरी को उसकी पहचान न बनने दें। क्योंकि आपका छोटा-सा सहयोग उसके आज का उपचार ही नहीं, उसके कल की नई उड़ान बन सकता है।

सभी पेरेंट्स चाहते हैं बच्चे आगे बढ़ें ...

लेकिन गरीबी के कारण नहीं पढ़ा पाते

आप सभी दानी जनों के सहयोग से नारायण चिल्ड्रन अकेडमी के
माध्यम से बच्चों को नि:शुल्क डिजिटल शिक्षा दी जा रही है



आपश्री प्रेम, सहयोग आगे भी बनाये रखें ऐसी प्रार्थना है

सेवा–पाती (मासिक पत्रिका) मुद्रण तारीख 1 अक्टूबर, 2026 आर. एन. आई. नं. DELHIN/2017/73538, स्वत्वाधिकार नारायण सेवा संस्थान, प्रकाशक जतन सिंह मो. 09871320593 द्वारा 6473, कटरा बरियान, फतेहपुरी, दिल्ली–110006 से प्रकाशित तथा थॉमसन प्रेस इंडिया लिमिटेड, फरीदाबाद से मुद्रित। मुद्रित संख्या 1,00,000 (मूल्य) 5 रूपये